अभिव्यक्ति... एक मज़बूत उपचार 'आधार'

फिर वही सन्नाटा, शब्द गुमराह, मौन भूलभुलैया में,
थम गई कलम, विचारों के दीप यूं ही जलते-बुझते,
अनकही पीड़ा, उलझनों में फंसे भावों का लय प्रवाह,
तमाम कोशिशें असफल, आवाज़ बिगुल शक्ति थमी,
कैसी है यह 'अभिव्यक्ति आज़ादी' बदलती परिभाषा,
सही अर्थ ही इसकी पहचान है, आत्मा से निकले बोल।

'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' संविधान की संविधानिक देन,
विचारों का सेतु, जो जोड़ता है जन और शासन की जान,
संशोधन शक्ति, नीति निर्माण में भरे गुणवत्तापूर्ण आत्मा,
यही वो आधार है, जिससे पनपे जन कल्याणकारी गाथा,
लेखन, कला, भाषण है दर्पण, उजागर करें देश समस्याएं,
नई सुबह सूचक, जोड़े नए अनुच्छेदों को साहस से भरपूर।

याद करें स्वतंत्रता यज्ञ में, अभिव्यक्ति चिंगारी थी प्रबल,
अनेकों वीरों ने देश हित माना, था अधिकारों का आधार,
प्रस्ताव,विचार, आन्दोलन सभी को मिला था इसमें स्थान,
लोकतंत्र की आत्मा रही जीवित, खुले रहे संवाद के द्वार।
गौर करें हथियार शक्तिशाली.. साथ लाए अनेक ज़िम्मेदारी,
हर शब्द, हर भाव, सामाजिक मर्यादा से बंधते जुड़ते है रहते।

है दायित्व न हो दुरुपयोग और न शक्ति हथियार कहर का,
इसका उद्देश्य समझे 'महत्वपूर्ण' साझा होना विचारों के संग,
विकास, न्याय,संस्कृति की धारा को सकारात्मक रंगों से भरना,
असहमति होना 'अवसर' संवाद का, वजहें नहीं आपसी युद्ध का,
बेशुमार शक्तियों युक्त, व्यर्थ न करें, न होने दे असभ्य भाषा,
आज़ादी शर्मनाक न हो, न अपमान या घृणा फैलाने का जरिया,

यह तो है देश आत्मा की पुकार, राष्ट्र के उजाले का उत्तम रास्ता,
अभिव्यक्ति दीप जलाओ, विवेकपूर्ण वरना लौ का भटकना है तय,
अंधेरे न जलाए समाज आवेश में, रौशनी दे न सके दस्तक बेवजह,
स्वतंत्र स्वर जिम्मेवारी हो पूर्ण देश हित में वरना परिणाम घातक,
यही लोकतंत्र असल परिभाषा और श्लोक अभिव्यक्ति स्वतंत्रता का।

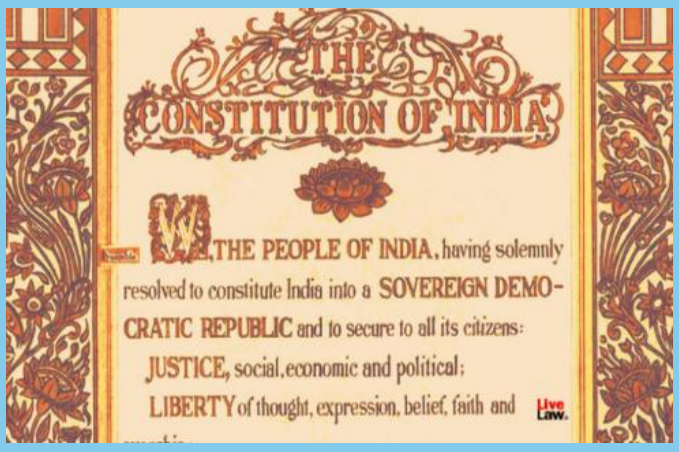

संविधान दिवस के अवसर पर

गीतांजलि सक्सेना 2025